Introduction

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय की पीएच.डी. की उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रबंध

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य में व्यंग्य आधुनिक विधा है। व्यंग्य लेखन का आरंभ भारतेन्दु युग से माना गया है। इसके पूर्व वह हिन्दी साहित्य के पूर्ववर्ती कालों में अपनी स्थापना नहीं कर सका था। यद्यपि छूटमूट और गौण प्रवृत्ति के रूप में आदिकाल से ही व्यंग्य लेखन दृष्टिगत होता है। किन्तु भारतेन्दुजी के प्रयास से एवं उनके समकालीन लेखकों के द्वारा तद् युगीन (भारतेन्दु युगीन) साहित्य में व्यंग्य लेखन एक आवश्यक प्रवृत्ति के रूप में दृष्टिगत होता है। भारतेन्दु युग में व्यंग्य-काव्य, व्यंग्य-उपन्यास, व्यंग्य-कहानी, व्यंग्य-निबंध, व्यंग्य-नाटक आदि व्यंग्यपरक रचनाओं का लिखना प्रारंभ हो गया था।

स्वतंत्रता पूर्व व्यंग्य लेखन हास्य का दामन पकड़ कर चल रहा था। किन्तु वह हिन्दी साहित्य में स्वतंत्र रूप से खड़ा होने में असमर्थ रहा। स्वतंत्रता के बाद ही विसंगतियों की घनीभूतता के आधार पर उसके स्वरूप और उसकी प्रवृत्तिओं का विकास होता है। अनाचार, अत्याचार, भ्रष्टाचार, चोरी, लूटफाट, कालाबाजारी, भाई-भतीजावाद, रिश्वतखोरी, अंधविश्वास, जातिवाद, प्रांतिय झगड़े आदि विसंगतिया स्वतंत्रता के पश्चात ही दृष्टिगत होती हैं। इसीलिए व्यंग्य हास्य का साथ छोड़कर स्वतंत्र रूप से अपने पेरौं पर खड़ा हुआ। इसे अपने विकास के लिए घनीभूत विसंगतियों का परिवेश मिला, साथ ही व्यंग्यधर्मी रचनाकार भी मिले।

अब व्यंग्य स्वतंत्र रूप से एक स्थापित विधा के रूप में प्रतिष्ठित होने लगा है। साठोत्तर काल में उक्त विसंगतियाँ और भी घनीभूत होती गई, जिसके परिणाम स्वरूप व्यंग्य के कथ्य और शिल्प दोनों में ही एक नया परिवर्तन आया। व्यंग्य प्रतिमान के पूराने और परंपरित चौखटे टूट गये। उस समय भाषिक तथा संरचनात्मक शैल्पिक आयाम के स्तर पर व्यंग्य ने अपनी नित्य नई-नई छवियों का परिचय कराया। यही कारण है कि साठोत्तर युग के व्यंग्यकारों ने शब्द-चयन, शब्द-शक्ति, समानान्तरता, अप्रस्तुत, योजना तथा विविध शैलीय

प्रयोगों के द्वारा व्यंग्य विधा को अलंकृत किया।

भारतेन्दु युग में प्रारंभ हुई इस विधा को शुद्र से ब्राह्मण पद तक पहुचानेवालें अनेक व्यंग्यकार हैं। हिन्दी साहित्य में व्यंग्य-निबंध लिखने का प्रारंभ भारतेन्दु युग से ही माना जाता है। साठोत्तर युग में हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, रवीन्द्रनाथ त्यागी, श्रीलाल शुक्ल, लतीफ घोंघी, शंकर पुणताम्बेकर, सुदर्शन मजीठिया से लेकर बालेन्दु शेखर तिवारी तक अनेक व्यंग्यकारों ने इसे सर्वांगीण रूप से समृद्ध किया है।

प्रारंभ से ही मुझे व्यंग्य के प्रति रूची रही है। अपने शिक्षाकाल के पाठ्य-पुस्तकों के अतिरिक्त 'रंगचक्कलस' और 'दुड़दंग' जैसी व्यंग्य प्रधान पत्रिकाओं को मैं पढती रही। इसी प्रकार 'गुजरात समाचार' तथा 'संदेश' जैसे दैनिक समाचार-पत्रों में प्रकट होनेवालें व्यंग्य स्तम्भों को भी पढ़ने का मेरा स्वभाव बन गया। इससे मेरे मन में व्यंग्य के प्रति जो रूची रही थी उसका विकास एम. ए. के बाद हुआ। इधर संयोग से मुझे अपने शोध-कार्य के लिए जैसा मार्गदर्शक मैं चाहती थी उसी रूप में विभाग के डॉ. कहारजी से मेरी भेंट होने पर उन्होंने मेरे निवेदन को स्वीकार किया।

इधर व्यंग्य-निबंध लेखन तो अनेक रूप से विकसित हो रहा है किन्तु उसकी दिशाओं के अन्वेषण का व्यवस्थित और सर्वांगीण रूप से प्रयास नहींवत् दृष्टिगत हो रहा था। व्यंग्य निबंध के विषय-वस्तु पर तो शोध-ग्रंथ देखे जाते हैं, किन्तु उसके शिल्प-पक्ष का प्रायः अभाव ही दृष्टिगत होता है। इसीलिए इसी दिशापूर्ति में क्यों न वैज्ञानिक रूप से शोध-कार्य किया जाय ऐसा सुझाव मुझे डॉ. कहारजी से मिला और मैंने 'साठोत्तर हिन्दी व्यंग्य निबंध साहित्य का भाषा एवं शैली वैज्ञानिक अनुशीलन' को शोध-कार्य का प्रमुख विषय बनाया।

अध्ययन के उचित निर्वाह हेतु मैंने इस शोध-प्रबंध को आठ अध्यायों में विभाजित किया है।

प्रथम अध्याय में व्यंग्य का शास्त्रीय अध्ययन तथा शैली वैज्ञानिक चिंतन के विविध आयामों का उल्लेख किया गया है। व्यंग्य के शास्त्रीय अध्ययन के अंतर्गत व्यंग्य की

व्युत्पत्ति, व्यंग्य विषयक परिभाषाएँ, व्यंग्य के तत्त्व एवं व्यंग्य के प्रकार आदि की चर्चा की है। शैली वैज्ञानिक चिंतन में शैली की परिभाषा, शैलीविज्ञान की परिभाषा तथा शैली वैज्ञानिक अनुशीलन से तात्पर्य आदि का अध्ययन किया गया है।

द्वितीय अध्याय में व्यंग्य निबंध के स्वरूप तथा उसके विकास को प्रस्तुत किया गया है। साठोत्तर पूर्व युगों का संक्षिप्त परिचय के साथ व्यंग्य निबंध के विकास में योगदान देने वाले व्यंग्य निबंधकारों पर दृष्टिपात किया गया है।

तृतीय अध्याय के अंतर्गत साठोत्तर कालीन हिन्दी के प्रतिनिधि व्यंग्य निबंधकारों का विस्तृत परिचय दिया गया है।

चतुर्थ अध्याय से सप्तम अध्याय में व्यंग्य निबंध के भाषा एवं शैली वैज्ञानिक अध्ययन को समाविष्ट किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में व्यंग्य निबंधों में विविध भाषा के शब्दों का चयन तथा विभिन्न भाषिक उपकरणों-जैसे मुहावरें, लोकोक्तियाँ, सूक्तियाँ आदि से सम्बन्धित चयन प्रक्रिया के अध्ययन पर दृष्टिपात किया गया है।

पंचम अध्याय में साठोत्तर हिन्दी व्यंग्य निबंध में प्रयुक्त शब्द-शक्ति तथा विचलनमूलक उपकरणों का उध्ययन किया गया है।

षष्ठम अध्याय में व्यंग्य निबंधों में निहित समानान्तरता तथा अप्रस्तुत विधान जैसे उपकरणों का समावेश किया गया है।

सप्तम अध्याय में व्यंग्य निबंधों में प्रयुक्त विभिन्न शैलियों का वैज्ञानिक अध्ययन किया गया है।

अष्ठम अध्याय उपसंहार से सम्बन्धित है। इसके अंतर्गत पूर्व अध्यायों का निष्कर्ष प्रस्तुत करते हुए अपने शोध-कार्य की मौलिक विशेषताओं को प्रकाशित करने का लघु प्रयास किया है।

अंत में परिशिष्ट है। जिसमें व्यंग्य निबंध संग्रह, सहायक ग्रंथ तथा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं की सूची दी गई है।

इस शोध-प्रबंध की अध्ययन प्रक्रिया में अनेक विद्वानों, महानुभावों तथा आत्मियजनों ने सहयोग प्रदान किया है। इन सब के प्रति मैं आभार प्रदर्शित करती हूँ। मैं विशेष रूप से अपने मार्गनिर्देशक डॉ. भगवानदास एन. कहार की चिर कृतज्ञ हूँ जिन्होंने मुझे इस विषय पर शोध-कार्य करने के लिए प्रेरित तो किया, साथ ही अपने बहुमूल्य सुझाव एवं मार्गदर्शन भी दिया है। जिसके लिए मैं उनकी आजीवन हृदय से ऋणी रहूगी। मैं अपने विभागाध्यक्ष डॉ. पारूकान्त देसाई के प्रति भी आभार प्रदर्शित करती हूँ, जिन्होंने यथा अवसर मेरी जिज्ञासाओं का समाधान किया है।

इसके साथ ही डॉ. प्रतापनारायण झा, डॉ. अक्षयकुमार गोस्वामी, डॉ. प्रेमलता बाझना, डॉ. अनुराधा दलाल, डॉ. चतुर्वेदी, डॉ. इन्दू शुक्ला, डॉ. शैलजा भारद्वाज आदि गुरूजनों का स्नेहपूर्ण प्रोत्साहन भी मुझे मिलता रहा है। इन सब का भी मैं आभार मानती हूँ।

मेरे पिता श्री अरविन्दकुमार शाह तथा माता श्री दक्षाबहन शाह एवं समस्त आत्मीयजनों तथा मित्रों के प्रति आभार प्रकट करती हूँ, जिनके असीम स्नेह एवं सहयोग के कारण आज मैं कुछ शब्दों को लिखने के योग्य हो सकी।

विनीत

हेमा शाह